दलितों व शोषितों का पाक्षिक पत्र
विज्ञापन के लिए केन्द्रीय सरकार व राज्यों द्वारा स्वीकृत

हमायती

सम्पादक–डॉ0 सोहनपाल सुमनाक्षर

❑ *वर्ष 62* ❑ *अंक-9* ❑ *दिल्ली* ❑ *फरवरी (प्रथम) 2024* ❑ *मूल्य : 2 रु.*

गुरू रविदास जी की जयंती पर विशेष लेख

गुरु रविदास जी का बेगमपुरा लोकतांत्रिक राष्ट्र

• डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर

संत शिरोमणि गुरु रविवास जी का जन्म आज से कोई 650 वर्ष पूर्व पंडित, पांडे, ब्राह्मणों के गढ़ काशी (वाराणसी) में एक चर्मकार के घर माघ पूर्णिमा को रविवार के दिन हुआ था। इस विषय में यह दोहा प्रसिद्ध है–

चौदह सौ तैंतीस की
माघ सुदी पंदरास।
दुनियों के कल्याण हित,
प्रगटे श्री रविदास।।

यह वह समय था जब समाज में छुआछूत, जात–पांत, भेदभाव, ऊंच–नीच, अंधविश्वास चरम सीमा पर था। शूद्र जाति के लोगों को तो जानवरों से भी नीचे मानकर ब्राह्मणवादी लोग उनके साथ दुराचार, अत्याचार, बलात्कार और बर्बरता बरतते हुए उन्हें समता के सभी मानवीय अधिकारों से वंचित किया हुआ था।

भगवत भजन का एकाधिकार ब्राह्मणों का था, और ब्राह्मण को मनु व्यवस्था के अनुसार वर्ण व्यवस्था में सर्वोच्च मानकर सत्ता के शिखर पर बैठे राजा–महाराजा धर्मान्धता के कारण उन्हें पूरा सम्मान देते हुए उनके हर गलत कार्य को भी सही मानते हुए उन्हें पूरा सम्मान देते थे। समाज में अछूतों की तरह महिलाओं को भी बराबर सम्मान प्राप्त नहीं था। उन्हें भी पैरो की जूती मानते हुए उनके साथ खुला दुर्व्यवहार किया जाता था। पति की मृत्यु के साथ उसे भी सती होने के लिए बाध्य किया जाता था।

ऐसे मध्यकालीन भारत में संत शिरोमणि गुरु रविदास ने जन्म लेकर सामाजिक असंतुलन को संतुलित किया, अशांत हृदयों को अपनी वाणी से शांत किया, निराश मनों को आशा की नई किरण दिखाई, अंध विश्वास एवं भ्रमों का प्रमाणित तर्कों से पर्दाफांस किया। धर्म के नाम पर हो रहे अत्याचारों को खत्म करके पूजा का नया सिद्धांत प्रस्तुत किया, ऊंच–नीच की दीवारों को गिराकर सभी को एकता का पाठ पढ़ाया और भाईचारे की भावना को प्रोत्साहित किया।

गुरु रविदास जी ने ब्राह्मणों के गढ़ काशी में वर्ण व्यवस्था का विरोध डंके की चोट करते हुए खुले शब्दों में कहा–

जात–पांत पूछे न कोई,
हरि को भेजे सो हरि का होई।

उन्होंने मन की शुद्धता पर जोर देते हुए कहा–

जिसका मन चंगा,
उसकी खटोटी में गंगा।

गुरु जी ने जात–पांत पर चोट करते हुए कहा–

जात–जात में जात है
ज्यों केलन में पात।
'रविदास' न मानुष जुड़ सकै,
जौ लौं जात न जात।।

उन्होंने मनुष्य के गुणों को महत्ता देते हुए कहा–

रविदास ब्राह्मण ना पूजिये,
जऊ होवे गुनहीन।
पूजिहि चरन चंडाल के,
जऊ होवै गुन परवीन।।

गुरु रविदास जी ने देवी–देवता, मूर्तिपूजा, पूजा–पाठ, धार्मिक आडम्बर का पर्दाफांस करते हुए कहा कि मन ही मंदिर है जहां से सच्ची सुख शांति प्राप्त हो सकती है–

मन ही पूजा, मन ही धूप।
मन ही सेवू सहज सरूप।।

गुरु रविदास जी ने परमात्मा प्राप्ति के लिए बाहरी कर्मकांडों व पूजा पाठों का खंडन करते हुए कहा कि सच्चे मन से प्रभु को समर्पित कर सच्ची पूजा कर सकते हैं–

जब हम होते तब तू नाही,
अब तूही मैं नाही।
जऊ हम बांधे मोह पास,
हम प्रेम बधनि तुम बांधे।।
अपने छुटन को जतनु करहु,
हम छुटे तुम आराधे।।

गुरु रविदास जी ने कट्टरपंथी पंडित–पांडे और मुल्ला मौलवियों पर भी सीधा प्रहार करते हुए कहा–

मंदिर से कोई घिन नहीं,
मस्जिद सो ना प्यार।
दोनों में राम–रहिम नहीं,
कह रविदास चमार।।

गुरु जी ने धर्मांतरण पर सीधी चोट करते हुए कहा–

हरि सा हीरा छांडिके,
करे अन की आस।
ते नर दोजख जायेंगे,
सत भाखै रविदास।।

गुरु जी का कहना था कि बड़े पुण्य कर्मों के बाद यह दुर्लभ मनुष्य जीवन मिला है। इसे व्यर्थ में विकारों

(शेष पृष्ठ 5 पर)

सम्पादकीय

दलित साहित्य-विषमतायें मिटाने वाला प्रकाश पुंज

• डा. सोहनपाल सुमनाक्षर

भारत ऋषि–मुनियों का देश रहा है जिन्होंने छोटे से छोटे जीव के अंदर आत्मा व परमात्मा का वास माना है। इसी लिए उन्होंने ही उद्घोष किया था–'आत्मा सर्वभूतेषु' और इससे आगे उन्होंने मंत्र दिया–

'सर्वे भवन्तु सुखिन।
सर्वेसन्तु निरामय,
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु।
मा कश्चिद् भागभवेत।'

वैदिक काल में उन्होंने कभी इन्सान–इन्सान में भेदभाव नहीं किया। सबका कल्याण हो, सब सुख से रहें। कोई दुखी न रहे। यह था प्राचीन ऋषि– मुनियों का दर्शन।

उस समय यह मेरा है या तेरा है, जैसी भावना किसी में नहीं थी। सभी के अन्दर पारिवारिक लोक भावना थी–

अयं निजः परोवेति
गणना लघुचेतषाम्।
उदार चरितानाम् तु
वसुधैव कुटुम्बकम्।।

उनके लिए सारा विश्व एक परिवार के समान था, न कोई छोटा, न कोई बड़ा। किसी से कोई ऊंच–नीच का भेदभाव न था। सभी समान थे। सभी के अन्दर एक दूसरे के लिए प्यार, सम्मान और आदर–भाव था।

समाज को सुचारू रूप से संचालन के लिए व्यक्ति की कार्य कुशलता को देखकर वर्ग व वर्ण बनाये गये। उस समय वर्ण व्यवस्था में लचीलापन थां व्यक्ति अपनी प्रतिभा, क्षमता व कौशल से अपना वर्ण बदल सकता था। पर कालान्तर में स्वार्थी लोगों ने इस वर्ण व्यवस्था को स्थायी बना दिया। जो जिस वर्ण में पैदा हुआ है, वह उसी वर्ण में पूरे जीवन रहकर मरेगा, चाहे वह कितना भी बड़ा विद्वान, शूरवीर और कार्यकुशल क्यों नहीं हो। बस उसी काल से समाज में एक बहुत बड़ी विकृति ने जन्म लिया, जिसका भारी नुकसान देश और समाज को विदेशों की गुलामी के रूप में उठाना पड़ा।

इस वर्ण व्यवस्था की रूढ़िवादिता ने हजारों जाति और उपजातियों को जन्म दिया और यहीं से शुरू हुई इन्सानियत की गिरावट, जब एक इन्सान दूसरे इन्सान से घृणा करने लगा, एक इन्सान अपने को दूसरे से ऊंचा समझने लगा। व्यक्ति का यहां तक पतन हुआ कि व्यक्ति ब्राह्मण के घर जन्म लेकर समाज में सर्वोच्च बन गया ओर एक व्यक्ति शूद्र (दलित) के घर जन्म लेने से ही समाज में सबसे नीचा और अछूत माने जाने लगा। इससे देश तो कमजोर हुआ ही, इन्सानियत, प्रतिभा, पराक्रम व परिश्रम की भी अपार क्षति हुई। पर सबसे बड़ा नुकसान शूद्र समझी जाने वाली उन दलित जातियों को हुआ जिन्होंने हजारों साल तक अपमान, तिरस्कार, अन्याय और उत्पीड़न का जीवन जिया और गुलामी में जीवन बिताया।

(शेष पृष्ठ 3 पर)

भारतीय दलित साहित्य अकादमी प्रकाशन

विश्व धरातल पर दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
अंधा समाज और बहरे लोग	डॉ. सुमनाक्षर	60/–
सिन्धु घाटी बोल उठी	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
अब नहीं रहेंगे हाशिये पर	डॉ. सुमनाक्षर	80/–
अम्बेडकर शतक	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
विश्व विभूति डा. अम्बेडकर	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
दलित लेखक परिचय ग्रंथ (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	250/–
बुद्धा दू अम्बेडकर (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	150/–
दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अम्बेडकर दर्शन	डॉ. सुमनाक्षर	40/–
हमारे संत और समाज सुधारक	डॉ. सुमनाक्षर	60/–
धर्म और समाज	डॉ. सुमनाक्षर	40/–
आदिम जाति चमार (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	300/–
दलित उद्घोष	डा. सुमनाक्षर	80/–
दलित साहित्य की हुंकार-सात समन्दर पार	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
युगपुरुष बाबू जगजीवनराम	डॉ. सुमनाक्षर	200/–
प्राचीन आदिम जाति वाल्मीकि (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
सभ्यता, संस्कृति, समाज और साहित्य	आचार्य गुरुप्रसाद	100/–
डा. अम्बेडकर भजनावली	राजमल 'राज'	25/–
भारत रत्न डा. बी.आर. अम्बेडकर	राजमल 'राज'	25/–
मूल भारती से दलित	राजमल 'राज'	50/–
अम्बेडकरवाद बनाम सामाजिक परिवर्तन	राजमल 'राज'	80/–
दलित साहित्य–दशा और दिशा	डा. माता प्रसाद	200/–
दलित साहित्य से सामाजिक परिवर्तन	डा. माता प्रसाद	100/–
भारत की गुलामी के 22 सौ साल	प्रदीप कुमार मौर्य	250/–
सृजन के कण	जीपी पचौरिया 'दीप'	150/–
बौद्ध धर्म–गया से अयोध्या तक	प्रदीप कुमार मौर्य	120/–
गांधी, अम्बेडकर और दलित	प्रदीप कुमार मौर्य	100/–
हम एक हैं	डा. माता प्रसाद	60/–
रैदास से संत शिरोमणि गुरु रविदास	डा. माता प्रसाद	50/–
ताकि सनद रहे	डा. सुमनाक्षर	100/–
Who's who Dalit Writers in India	Dr. Sumanakshar	500/-
Who's Who–International & National Awardees of B.D.S.A.	Dr. Sumanakshar	500/-

पुस्तक मंगाने के लिए मनीआर्डर से राशि अग्रिम भेजें, व्यवस्थापक

दलित साहित्य सेन्टर
(भारतीय दलित साहित्य अकादमी)
बी-3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन-1, दिल्ली-9
फोन : 27421449, मो. 9810278936, 9891989175

सम्पादकीय का शेष ...दलित साहित्य-विषमतायें मिटाने वाला प्रकाश पुंज

देश को आजादी मिलने पर बाबा साहब डा. भीमराव अम्बेडकर और बाबू जगजीवन राम जैसे राष्ट्रीय नेताओं ने समाज में समता और बन्धुता का सपना देखा था। इसीलिए बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने भारतीय संविधान में 'रानी और मेहतरानी' दोनों को 'एक वोट' का समान अधिकार दिया। साथ ही सभी को स्वतंत्रता, समता, न्याय का बराबर का अधिकार दिया। उन्हें आशा थी कि आजाद भारत में जात–पांत, छुआछूत, ऊंच–नीच का भेदभाव खत्म होगा, और जाति व वर्णगत उत्पीड़न खत्म होकर समाज में सभी लोग समानता, सम्मान व न्याय पा सकेंगे, पर आजादी के 75 साल बाद भी समाज में यह विषमता अभी भी दिखाई पड़ती है।

समाज की इन विषमताओं, रूढ़ियों और परम्पराओं को राजनेताओं, धर्मगुरुओं और साहित्यकारों को बदलना चाहिए था। पर लगता वे सब दलगत राजनीति, धार्मिक परम्परा और म्याभिमान को छोड़ने के लिए तैयार नहीं है। साहित्यकारों को इसमें पहल करनी चाहिए थी, पर वे भी यश व धन प्राप्ति के प्रलोभन में समाज में क्रान्तिकारी व परिवर्तनकारी साहित्य नहीं दे सके।

मुझे यह जानकर अपार खुशी है कि दलित समाज में से ही उनके पढ़े–लिखे शिक्षित लेखकों ने सामाजिक परिवर्तन के लिए दलितोत्थान साहित्य लिखने में पहल की है। श्रद्धेय बाबू जगजीवन राम जी ने 1984 में दलित लेखकों का मार्गदर्शन करने और उन्हें सम्मान देने के लिए जिस भारतीय दलित साहित्य अकादमी की स्थापना की थी आज वह अपना 39वां राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित कर चुकी है। मैं इस अवसर पर आप सभी को बधाई देता हूं कि आप दलित साहित्य के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन लाने में जुटे हैं और उन लोगों में स्वाभिमान, आत्म–सम्मान और जन चेतना जागृत करने में लगे हैं, जिनको मानवीय अधिकारों से वंचित किया हुआ है।

दलित साहित्य, साहित्य लेखन का नवीन भाग तो नहीं कहा जाना चाहिए। इसकी नींव तो कालांतर में रखी जा चुकी होगी, जब जाति भेद अथवा सबल निर्बल के भेद के भावों का उदय हुआ होगा, परन्तु वर्तमान में इस साहित्य लेखन को 'दलित साहित्य' नाम से जाना जा रहा है और यही साहित्य सदियों से शोषित पीड़ितजनों का हिमायती भी बनकर साहित्य जगत में उभरा है। पूर्व के कुछ विचारकों, लेखकों ने जनवादी साहित्य लिखा। इसके बावजूद प्रतिवादी साहित्य लिखा गया, अब दलित साहित्य लिखा जा रहा है, जो समस्याओं के समाधान और सामाजिक समानता स्थापित करने में मील का पत्थर साबित हो रहा है।

दलित साहित्य को दलित वर्ग के हिमायती के नाम से जाना जा रहा है। दलित साहित्य शोषितों, पीड़ितों के कष्टों, दर्दों, समस्याओं और दयनीयता का जीवंत उल्लेख तो है ही, साथ ही मुक्ति का आह्वान, समस्याओं के समाधान और मानवीय विषमता के भावों के निराकरण की सशक्त पहल बन चुका है। कहा गया है कि

जाके पांव ना फटे बिवाई।
वह क्या जाने पीर पराई।।

सत्य ही तो है। भोगा हुआ यथार्थ सच्चाई के अधिक निकट होता है। इसलिए दलित साहित्यकार द्वारा सृजित साहित्य अधिक विश्वसनीय होगा, परन्तु पूर्वाग्रहों, गैर दलित के विरोध की मानसिकता से परे एवं निश्छल भाव से लिया गया हो। वर्तमान में दलित साहित्यकार सक्रिय, सजग और सदृढ़ है और उनकी पैनी नजरें हर समस्याओं पर टिकी हुई है, चाहे वे सामाजिक हों, या आर्थिक हों। वो आज साहित्य जगत के लिए वरदान साबित हो रहे हैं।

दुर्भाग्य दलित साहित्य विक्रय योग्य न मानकर प्रकाशक प्रकाशित करने से परहेज कर रहे हैं, जबकि दलित साहित्य प्रमाणित, आत्मानुभूति और एक बड़ी शक्ति हैं, जिसे भोगे हुए यथार्थ के रूप में सृजित किया जा रहा है, जो सामाजिक समानता और समस्याओं के समाधान के लिए दृढ़संकल्पित है, जो आज भूमंडलीयकरण के जमाने में प्राथमिक आवश्यकता भी है। दलित साहित्य सामाजिक समानता का शंखनाद है। दलित साहित्य अतीत में की गयी भूलों को सुधारने का एक वैचारिक आंदोलन है। दलित साहित्य का सामाजिक अभ्युदय शोषण, उत्पीड़न, छुआछूत, विषमता, भेदभाव के उन्मूलन और सामाजिक परिवर्तन के लिए हुआ है। दलित साहित्य का मुख्य उद्देश्य दलित की अस्मिता और उनके स्वाभिमान को उच्च स्तर तक पहुंचाना है, जो सदियों से शोषित, पीड़ित हैं और उनके अनेक सामाजिक बुराइयों के शिकार हो रहे हैं और यही दलित साहित्य की प्रासंगिकता भी है। शास्त्र के खिलाफ साहित्य का शस्त्र थामना समयानुकूल उचित कदम है, जिसे गैर–दलितों द्वारा सराहा जाना चाहिए और उसमें उन्हें भरपूर सहयोग देना चाहिए, जो मानव एक समान और समानता की विचारधारा के पोषक हैं।

जैसा कि सर्वविदित है कि आज

के युग में विकास से दूर दलित कालांतर में अनगिनत परेशानियों के शिकार होकर दयनीय जीवन जीने का लाचार हो गये। आज भी विशेषकर ग्रामीण अंचलों में उन्हीं पुरातन समस्याओं का विषपान करने की दलित वर्ग विवश है। सारे कायदे कानून बौने साबित हो रहे हैं। दूल्हे को घोड़ी पर ना चढ़ने देना, जूते चप्पल पहनकर गैर दलितों के दरवाजे से निकलने पर पाबंदियां, दलित महिलाओं के साथ बलात्कार, छुआछूत ये, मानवता के माथे के कलंक आज भी मुखरित हो रहे हैं।

दलित शिक्षा, स्वास्थ, सम्मानजनक रोजगार, आवास, निर्धनता, भूमिहीनता के जाल में फंसा तड़प रहा है। इन समस्याओं पर काफी हद तक काबू पाया जा सकता है। इन वर्ग के लोगों को आर्थिक और शैक्षणिक रूप से सबल बनाकर। आज भी गांव हो या शहर, सरकारी जमीनें हैं, गांव सभी की जमीनें हैं। बहुत सारी जमीनें चारागाहों अथवा अन्य नामों खाली पड़ी जमीनें हैं जिनका उपयोग ही नहीं हो रहा है। इन जमीनों को भूमिहीनों में ईमानदारीपूर्वक बांटकर आर्थिक रूप से पंगु दलितों का भला हो सकता है। पढ़े–लिखों को सरकारी नौकरियां प्रदान की जा सकती हैं। इस वर्ग की तो पूछपरख तब तक होती है, जब तक वोट लेना होता है, इसके बाद तो यह वर्ग हाशिये पर चला जाता है। कुल मिलाकर यह वर्ग वोट बैंक होकर रह गया है।

दुर्भाग्यवश कुछ लोग दलितोत्थान का मतलब गैर दलितों का विरोध मानने लगे हैं। वे शिक्षा और विकास की तरफ बढ़ते कदम को रोकने का हर संभव प्रयास कर रहे हैं। दलितों की राहों में शूल बिछाने से बाज नहीं आ रहे हैं, जबकि दलितोत्थान गैर दलितों का विरोध नहीं होकर, दलितों की समस्याओं के निराकरण की पहल है। अंधेरे को कोसने की बजाय दिया जलाने के बराबर ही एक पुण्य काम है, जिसे दलितोत्थान कहा जा रहा है, पर न जाने क्यों कुछ लोगों को यह दलितोत्थान भी नहीं भा रहा है। लोग विरोध करने लगे हैं, सदियों से दबे–कुचले लोगों की जरा सी उन्नति को देखकर।

वास्तव में सामाजिक न्याय तथा सामाजिक समानता के लिए समातवादी समाज की स्थापना होनी चाहिए, परन्तु इसका मतलब यह नहीं कि गैर दलितों को कोसने मात्र से दलितोत्थान संभव है और गैर दलितों को भी इस पुनीत कार्य में बाधा नहीं पहुंचानी चाहिए। समानता का भाव स्थापित करने पर बल देना चाहिए, तभी तो सामाजिक समानता का साम्राज्य देश में स्थापित हो सकेगा। बाबा साहब अम्बेडकर सामाजिक समानता के सशक्त पक्षधर थे, पर वे इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए संवैधानिक तरीकों के पक्षधर थे। उनका कहना था कि दलितोत्थान का अर्थ दलितों की स्थिति में सुधार है, इसको फलीभूत करने के लिए दलितों को साक्षर बनाया जाना अति आवश्यक है। शिक्षित तथा चेतनाशील दलित खुद ही उन समस्याओं से मुक्ति पा जाएगा, जो उसके विकास में बाधक है। आर्थिक आत्मनिर्भरता, पेशागत रोजगारों के विकल्पों की तलाश भी दलितोत्थान का महत्वपूर्ण हिस्सा है, साथ ही स्वास्थ, आवास, जनसंख्या जैसी समस्याओं के उन्मूलन भी दलितोत्थान के लिए आवश्यक है। यदि गौर किया जाये तो हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि बाबा साहब डा. अम्बेडकर के जीवन दर्शन, व्यक्तित्व, कृतित्व एवं विचारधारा ने दलित लेखन को नई दिशा दी है। यकीनन, इससे दलित लेखकों को पुरानी रूढ़िवादी मूल्यों के पुनर्मूल्यांकन के लिए नई ऊर्जा एवं व्यापक दृष्टि प्राप्त हुई है और उनका इतिहास बोध भी काफी हद तक विकसित हुआ है। परिणामस्वरूप दलित साहित्यकार न केवल आधुनिक हुए हैं, वरन उसमें समाज, परम्पराओं और इतिहास के मूल्यों के मूल्यांकन की नवशक्ति का भी विकास हुआ है। वर्तमान में दलित साहित्य जन समुदाय से जुड़कर जनभाषा में क्रांति लाकर सामाजिक न्याय के लिए संघर्ष कर रहा है।

दलित साहित्य सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक संरचनाओं के निर्माण में संघर्षरत है। दलित साहित्य सामाजिक परिवर्तन का साक्षी है, जिसमें दलित कल्याण के साथ देशभक्ति भी निहित है। यह माना जाना चाहिए कि दलित साहित्य का काम दलितों का हिमायत करना और दलितोत्थान का मार्ग प्रशस्त करना है ना कि गैर दलितों को विरोध। दलित साहित्य और दलितोत्थान को दलित समस्याओं का निराकरण और सामाजिक समानता की स्थापना के संदर्भों में व्याख्यायित और संचालित किया जाना चाहिए, जो दलितोत्थान के साथ ही देश और समाज के लिए भी हितकर होगा। वास्तव में दलित साहित्य समस्याओं के समाधान और सामाजिक समानता के भाव में अभिवृद्धि करते हुए अंधकार में प्रकाशपुंज साबित हो रहा है।•

हिमायती
हिन्दी पाक्षिक पत्र

अम्बेडकर मिशन का प्रतिनिधि पत्र है। इसे मंगाइये, पढ़िए और दूसरों को पढ़ाइये। इससे जन चेतना जागृत होगी और दलित संघर्ष तीव्र होगा। इसका सहयोग वार्षिक शुल्क 200/- मनीआर्डर से आज ही भेजें–

सम्पादक :
हिमायती
बी 3/9, दूसरी मंजिल,
माडल टाउन-1, दिल्ली-9
मो. 9810278936
फोन : 011-27421449

पृष्ठ 1 का शेष....गुरु रविदास जी का बेगमपुरा लोकतांत्रिक राष्ट्र

में फंसाकर व्यर्थ गंवाने की जगह प्रभु स्मरण में लगाना चाहिए–

दुलभ जनमु पुनः फल पाइओ,
बिरथा जात अविवेकै।
राजे इन्द्र समसरि ग्रिह आसन,
बिनु हरि भगति कहहु किह लेखै।।

गुरु रविदास जी ने अपनी सच्ची अटूट, विलक्षण भक्ति से ब्राह्मणों के गढ़ काशी (वाराणसी) में उन पंडों– पुजारियों को परास्त किया जिन्होंने उनकी आध्यात्मिक भक्ति को ललकारा था। गुरु जी से परास्त होकर उन ब्राह्मणों को शर्त के अनुसार गुरु रविदास जी को डोली में बैठाकर अपने कंधों पर उठाकर सारी काशी नगरी में घुमाना पड़ा।

गुरु रविदास जी की भक्ति भाव से प्रभावित होकर कितने ही राजा– महाराजा और महारानियां उनकी शिष्य/शिष्या बन गये। इनमें चित्तौड़ की महारानी झालीबाई और उसकी पुत्र वधु महारानी मीराबाई प्रमुख हैं। गुरुजी ने इस तरह अपनी आत्मशक्ति और सच्ची भगवान भक्ति के आधार पर झोंपड़ियों की पगडंडियों को राजमहलों से जोड़ा। भगवान बुद्ध के बाद यह दूसरी सामाजिक क्रांति थी जिसने मनुस्मृति, ब्राह्मणवाद, वर्ण व्यवस्था को नकार कर मानव समता का मार्ग प्रशस्त किया। उनकी भक्ति में रमी महारानी मीराबाई तो खुले रूप से गाती फिरती थीं–

मीरा ने गाविंद मिल्या जी,
गुरु मिल्या रैदास।।
रैदास संत मिले मोहिं सत्गुरु,
दीन्ही सुरत सहदानी।
मेरो मन लागो गुरु सों,
अब न रहूंगी अटकी।
गुरु मिलिया रैदास जी
दीन्ही ज्ञान की गुटकी।।

इसलिए आचार्य रजनीश अपनी पुस्तक **तुम्हीं पूजा, तुम्हीं धूप** में कहते हैं कि जो व्यक्ति एक महारानी के मन में बसता हो, वह कोई छोटा–मोटा व्यक्ति नहीं, बल्कि एक विलक्षण महान व्यक्ति था, रैदास भारत के आकाश के ध्रुवतारा थे।

गुरु रविदास जी अपनी आध्यात्मिक शक्ति व भक्ति की सुगन्धि विश्व में छोड़ते हुए 151 वर्ष की लम्बी आयु में सवंत 1584 में चित्तौड़गढ़ में ब्रह्मलीन हुए, जहां महारानी मीराबाई के निमंत्रण पर वे वहां गये थे। उनकी स्मृति में वहां स्थापित छतरी उनके चरणों की छाप के साथ विराजमान है।

गुरु जी चहुंमुखी विद्या के धनी थे। उन्होंने अपने लोगों के अंदर स्वाभिमान जगाते हुए कहा –

पराधीनता पाप है
जानु लेहू मेरे मीत।
रविदास दास पराधीन से,
कौन करे है प्रीत।।
पराधीन का दीन क्या,
पराधीन बेदीन।
रविदास दास पराधीन को,
सभी ही समझे हीन।।

गुरु जी ने कहा कि हमें मधुमक्खिओं की तरह मिलकर रहना चाहिए और अपने साथ हो रहे अन्याय व शोषण का विरोध करते हुए अपने मानवीय एकता के अधिकारों की प्राप्ति के लिए संघर्ष करना चाहिए। उन्होंने कहा–

सत संगति मिली रहिये माधव,
जैसे मधुम मखीरा।

उन्होंने शिक्षा पर जोर देते हुए कहा कि शिक्षा के बिना विवेक रूपी दीया मलीन हो जाता है, इसलिए शिक्षित होना जरूरी है–

माधो अबदिया हितकीन
विवेक दीप मलीन।

गुरु रविदास जी ने सच्चे लोकतांत्रिक राज्य की इन शब्दों में अपनी इच्छा की प्रगट की–

ऐसा चाहुं राज मैं,
जहां मिलै सभन को अन्न।
छोट बडे सब सम बसैं,
रविदास रहें प्रसन्न।।

गुरु जी ने 'स्वराज' को सर्वोत्तम बताते हुए कहा–

रविदास मानुष बसन कूं
सुखकर हैं दुई ठांव।
एक है 'स्वराज्य' में,
दूजा मरघट गांव।।

गुरु रविदास जी ने सच्चे समता–वादी, मानवतावादी और सम्पन्नता व सुख शान्ति से भरपूर बेगमपुरा राष्ट्र की कल्पना अपनी प्रसिद्ध साखी बेगमपुरा शहर में की थी–

बेगमपुरा शहर को नाऊ।
दुखु अंदोहु नहीं तिहि ठाउ।।
ना तसवीस खिराजु न मालु।
खउफु न खता न तरसु जमालु।।

इस बेगमपुरा शहर में न दुःख है, न चिंता, न कोई गम। यहां किसी को कोई डर–भय नहीं, क्योंकि यहां कोई किसी के आधीन नही। यहां सदैव सुख और कल्याण है। यहां न तो किसी प्रकार का माल खरीदना पड़ता और न ही कोई टैक्स देना पड़ता है, यहां न कोई घाटा हो जाने का डर है। यह सुन्दर शहर एक बादशाहत के आधीन सदैव आबाद रहता है और जलवायु के लिहाज से सर्वोत्तम है, यहां कहीं भी आने–जाने की कोई रूकावट नहीं है जो जहां चाहे सैर करता फिरता है। सब लोग यहां रोटी, कपड़ा, मकान की समस्या से दूर भाईचारा व बराबरी के लिहाज से समान स्तर पर आनन्द के साथ रहते हैं।

गुरु रविदास जी के बेगमपुरा राष्ट्र की कल्पना को बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने भारतीय संविधान में समाजवादी, समतावादी–समता, स्वतंत्रता, भाईचारा पर आधारित सबको शिक्षा, चिकित्सा, सुरक्षा, न्याय, धर्म व आस्था में स्वतंत्र अभिव्यक्ति के अधिकार देकर पूरा किया है।

भारतीय संविधान गुरु रविदास जी के सपनों का दस्तावेज है जो देश के प्रत्येक नागरिक को समानता के अधिकार प्रदान करता है। गुरु जी की इस बेगमपुरा साखी के साथ उनके 40 पद महान पवित्र ग्रंथ श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दिये गये हैं जो उनकी महानता और महत्ता को दर्शाती है।

ऐसे महान बेगमपुरा राष्ट्र की कल्पना करने वाले, सर्वप्रथम 'स्वराज्य' की प्रेरणा देने वाले और अपनी आध्यात्मिक भक्ति की शक्ति से मन में ही सच्चे परमात्मा का मन्दिर स्थापित करने वाले गुरुओं के भी गुरु श्री रविदास महाराज की जयन्ती पर हार्दिक बधाई। •

वीरांगना सावित्रीबाई फुले

• कु. बीनेश सिंह बौद्ध

करुणा, प्रेमज्ञान की साक्षात प्रतिमूर्ति सावित्रीबाई फुले का व्यक्तित्व सागर से भी ज्यादा गंभीर, आकाश की तरह विशाल था। महामानव एवं शिक्षा क्रांति के अग्रदूत ज्योतिबा फुले की धर्मपत्नी ममतामयी सावित्रीबाई फुले जीवन संगिनी थीं। उनके व्यक्तित्व और कृतित्व इतिहास के वे पन्ने हैं जो अनदेखे रह गये हैं। खण्डहर की वे बोलती ईंटें हैं, जिन्हें पढ़ा नहीं गया। जब भी कहीं महापुरुषों की चर्चा होती है, तो सभाओं में ज्योतिबाफुले को याद करके रह जाते हैं और उनकी जीवन सहचरी, शिष्या तथा धर्मपथ की मित्र सावित्रीबाई फुले को भूल जाते हैं, जबकि सत्य यह है कि महामानव ज्योतिबाफुले के जीवन को महान बनाने में इस महिला का भी बड़ा योगदान था। ममतामयी सावित्रीबाई का जन्म सतना जिले में खण्डला तहसील के नायगांव निवासी खंडोजी नेवसे पाटिल के यहां 3 जनवरी, 1831 में हुआ। वे उनकी ज्येष्ठ कन्या थी। उनका जब विवाह हुआ उस वक्त वे 9 वर्ष की थीं। सन् 1841 में उनका विवाह ज्योतिबा फुले के साथ हुआ। सावित्री बाई बिल्कुल अनपढ़ महिला थी। विवाह के पश्चात् वे जब ससुराल में आई तो उनके पति ने ही उनको घर में पढ़ाया–लिखाया। पढ़–लिखकर वे एक विदुषी महिला बनीं। उन्होंने ईसाई स्कूल में भी शिक्षा प्राप्त की। उस समय निग्रोजाति की दासता के विरुद्ध संघर्ष करनेवाले क्रांतिकारी थामसकल–फिसन का चरित्र पढ़ने पर उनके भीतर भी समाज में दबे कुचले लोगों के जीवन स्तर को ऊपर उठाने की भावना जागृत हुई। सावित्रीबाई ने अपने पति के साथ पुणे में बालिका विद्यालय की स्थापना की। इस प्रकार वे भारत में पहली शूद्र महिला थी, जिसने प्रथम महिला शिक्षिका का गौरव प्राप्त किया, उस समय जब वे अछूत बालिकाओं/शूद्र बालकों को पढ़ाने जाती थी, तब शिक्षा के अगुआ समाज के ठेकेदार ब्राह्मण लोग उनके ऊपर कीचड़ व पत्थर फेंकते थे। सावित्रीबाई इस अपमान को सहकर उनके कृत्यों को फूल समझकर ग्रहण करती रही तथा उन्हें सुखी रहने का आशीर्वाद देती थीं। अल्पकाल में उन्होंने 18 पाठशालायें खोलीं। ब्रिटिश सरकार ने इस कार्य में उनको सहयोग दिया। कितना आश्चर्यक होता है, पुणे में जिन ब्राह्मणों ने उनका विरोध किया, उनके गढ़ में सावित्रीबाई जाकर ब्राह्माण बालिकाओं को प्रशिक्षित कर रही थी। उनके साथ अछूत बालक–बालिकायें भी अध्ययन करते थे। आज जो भी महिलायें शिक्षित होकर उच्च पद पर आसीन हैं अथवा वैज्ञानिक, मंत्री आदि बनी हैं, इसका श्रेय सावित्रीबाई को जाता है, जबकि मनुवादी साहित्यकार, समाज के ब्राह्मण पुरोहित नारी को शूद्र नीच समझते थे तथा उसे शिक्षा को दूर रखने का आदेश था। ऐसे में सावित्रीबाई ने नारी शिक्षा का आंदोलन खड़ा कर दिया। उन्होंने अबोध, अनाथ तथा अवैध संतानों के लिए 'प्रतिबन्धक गृह' खोला। उन्होंने एक विधवा ब्राह्मणी की प्रसूतावस्था में बच्चे की नाल स्वयं काटी तथा अवैध कहे जाने वाले बालक को उन्होंने गोद लिया, पाल पोसकर बड़ा किया। इतिहास में ऐसा कोई उदाहरण नहीं है। ऐसा भी कोई उदाहरण नहीं कि किसी ब्राह्मणी ने अछूत बालक को गोद लिया हो और उसकी परवरिश की हो। सावित्रीबाई एक क्रांतिकारी महिला थी। जब उन्होंने 2000 निराश्रित बच्चों को भोजन व्यवस्था कर तथा उन बालकों की पूरी देखभाल की, इस प्रकार हम यह पाते हैं कि सावित्रीबाई 19वीं सदी की मदर टेरेसा थी। सावित्रीबाई एक अच्छी कवियत्री थी, शिक्षा पर जोर देते हुए अज्ञानता के नाश होने हेतु वे लोकगीत बनाकर स्वयं गाती थी और लोगों को प्रेरित करती थी। उनके पति ज्योतिबा फुले का निधन हुआ। उसके बाद भी समाज सेवा के उनके कार्य रुके नहीं। सत्य शोधक समाज के वार्षिक अधिवेशन में वे बढ़चढ़ कर भाग लेती थी। ऐसी सर्वगुण प्रतिभायुक्त ममतामयी विदुषी महिला जब हैजे के रूप में महामारी फैली, जनता की सेवा, रोगियों की सुरक्षा करते हुए वे अचानक बीमार पड़ गई तथा 10 मार्च 1996 को इस संसार से विदा हो गईं। •

कोरोना

कोरोना?
अब काहे का रोना,
तुम भूदेव हो, धन–धरती, सत्ता–सम्पदा
सबके तुम मालिक हो
जिसके बल पर, बहुजनों को
बनाकर गुलाम, करते रहे हो राज
फिर अब छपट–कपट करने के बाद
तुम्हारा यह काहे का रोना? कोरोना
तुम्हारे अडानी हैं, अम्बानी हैं,
टाटा–बिरला, सब अरबपति व्यापारी हैं
जिनके बल पर, लोकतंत्र को हथियाकर
तुम बने बैठे हो गरीबों के रहनुमां।
फिर अब काहे का रोना? कोरोना
तुमने चांद पर कदम बढ़ाया है
मंगल पर भी दस्तक दे आये हो,
अब लालसा है अन्य ग्रह फतेह करने की
उपेक्षा करके भारत के करोड़ों दलितों की
जो आस लगाये हैं तुमसे रोटी, कपड़ा और मकान की
फिर अब काहे का रोना? कोरोना।
33 करोड़ तुम्हारे देवता हैं, तुम्हारी रखवाली में,
ब्रह्मा, विष्णु, महेश हैं, तुम्हारी तिमारदारी में
मां दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती–तीनों हैं जुटी हैं
तुम्हें वीर, धनी, विद्वान पंडित बनाने में।
सबकी इतनी अपार शक्ति है तुम्हारे पास
फिर काहे का डरना? कोरोना।
तुम स्वर्ग के मालिक हो, अपने सुकर्मों से
वहां पहले ही अपनी सीट पक्की कर आये हो
यह धरती का नरक तो शूद्रों के लिए, दलित–बहुजनों के लिए है
इन्हें यहीं रहने दो, तुम इनकी चिंता छोड़ो,
ये अपने परिश्रम से इस ही स्वर्ग बना लेंगे।
अब क्या सोचते हो, स्वर्ग में हूर परियां कर रही हैं तुम्हारा इन्तजार
अब फिर कैसा रोना? कोरोना।

– डा. सोहनपाल सुमनाक्षर

हिमायती
7 / फरवरी (प्रथम) 2024 (कुल पृष्ठ 4)
प्रकाशन तिथि : 31 जनवरी, 2024

आर. एन. आई. नं. 40611/62
रजि. G-3/DL(N)/090/2018-2020

भारतरत्न सम्मान से विभूषित

जननायक कर्पूरी ठाकुर – व्यक्तित्व व कृतित्व

1990 की बात है। बिहार में खगड़िया जिले में पढ़ने वाले अलौली में लालू प्रसाद यादव का एक कार्यक्रम था। इस दौरान उन्होंने राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकुर का जिक्र किया। लालू यादव का कहना था, ''जब कर्पूरी जी आरक्षण की बात करते थे, तो लोग उन्हें मां–बहन–बेटी की गाली देते थे और, जब मैं रेजरबेसन (रिजर्वेशन) की बात करता हूं, तो लोग गाली देने के पहले अगल–बगल देख लेते हैं कि कहीं कोई पिछड़ा–दलित–आदिवासी सुन तो नहीं रहा है।' लालू प्रसाद यादव ने आगे इसका श्रेय उस ताकत को दिया जो कर्पूरी ठाकुर ने हाशिये पर रह रहे समुदायों को दी थी।

देखा जाए तो यही वह खूबी थी जिसके चलते बिहार के पहले गैर कांग्रेसी मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकुर के नाम के आगे जननायक की उपाधि जुड़ी। उनका नाम उन महान समाजवादी नेताओं की पांत में आते हैं जिन्होंने निजी और सार्वजनिक जीवन, दोनों में आचरण के ऊंचे मानदंड स्थापित किये थे।

पैमानों की इस ऊंचाई के कई किस्से हैं। 1952 में कर्पूरी ठाकुर पहली बार विधायक बने थे। उन्हीं दिनों उनका आस्ट्रिया जाने वाले एक प्रतिनिधिमंडल में चयन हुआ था। उनके पास कोट नहीं था तो एक दोस्त से कोट मांगा गया। वह भी फटा हुआ था। खैर, कर्पूरी ठाकुर वही कोट पहनकर चले गए। वहां यूगोस्लाविया के मुखिया मार्शल टीटो ने देखा कि कर्पूरी जी का कोट फटा हुआ है, तो उन्हें नया कोट गिफ्ट किया गया। आज जब राजनेता अपने महंगे कपड़ों और दिन में कई बार ड्रेस बदलने को लेकर चर्चा में आते रहते हों, ऐसे किस्से अविश्वसनीय ही लग सकते हैं।

एक और उदाहरण है। 1974 में कर्पूरी ठाकुर के छोटे बेटे का मेडिकल की पढ़ाई के लिए चयन हुआ। पर वे बीमार पड़ गए। दिल्ली के राममनोहर लोहिया हास्पिटल में भर्ती थे। हार्ट की सर्जरी होनी थी। इंदिरा गांधी को जैसे ही पता चला, एक राज्यसभा सांसद को वहां भेजा और उन्हें एम्स में भर्ती कराया। खुद भी दो बार मिलने गई। इलाज के लिए अमेरिका भेजने की पेशकश की। सरकारी खर्च पर। कर्पूरी ठाकुर को पता चला तो उन्होंने कहा कि वे मर जाएंगे पर बेटे का इलाज सरकारी खर्च पर नहीं कराएंगे। बाद में जेपी ने कुछ व्यवस्था कर न्यूजीलैंड भेजकर उनके बेटे का इलाज कराया।

इसी तरह एक और किस्सा है कि प्रधानमंत्री चरण सिंह उनके घर गए तो दरवाजा इतना छोटा था कि चौधरी जी को सिर में चोट लग गई। पश्चिमी उत्तर प्रदेश वाली खांटी शैली में चरण सिंह ने कहा, 'कर्पूरी, इसको जरा ऊंचा करवाओ।' जवाब आया, 'जब तक बिहार के गरीबों का घर नहीं बन जाता, मेरा घर बन जाने से क्या होगा?'

कर्पूरी ठाकुर का जीवन ताउम्र संघर्ष रहा। 1978 में बिहार का मुख्यमंत्री रहते हुए जब उन्होंने हाशिये पर धकेल दिये वर्ग के लिए सरकारी नौकरियों में 26 प्रतिशत आरक्षण लागू किया तो उन्हें क्या–क्या न कहा गया। लोग उनकी मां–बहन–बहू का नाम लेकर भद्दी गालियां देते। अभिजात्य वर्ग के लोग उन पर तंज कसते हुए कहते–कर कर्पूरी कर पूरा, छोड़ गद्दी, धर उस्तरा। यह तंज इसलिए कि कर्पूरी ठाकुर नाई समुदाय से ताल्लुक रखते थे।

1978 में कर्पूरी ठाकुर की सरकार ने सिंचाई विभाग में 17000 पदों के लिए आवेदन मंगाए। हफ्ता भर बीतते–बीतते उनकी सरकार गिर गई कई इन दोनों बातों का आपस में संबंध मानते हैं। उनके मुताबिक पहले होता यह था कि बैक डोर से अस्थायी बहाली कर दी जाती थी, बाद में उसी को नियमित कर दिया जाता था। माना जाता है कि एक साथ इतने लोग खुली भर्ती के जरिये नौकरी पाएं, यह सरकारी व्यवस्था पर कुंडली मारकर बैठे एक वर्ग को मंजूर नहीं था सो कर्पूरी ठाकुर को जाना पड़ा।

लालू प्रसाद यादव के वे राजनीतिक गुरू थे। और हो सकता है कि जनता से संवाद की चतुराई का कुछ हिस्सा लालू यादव ने उनसे भी सीखा हो। इसका अंदाजा एक किस्से से भी लगाया जा सकता है। अपनी मृत्यु से तीन महीने पहले कर्पूरी ठाकुर एक कार्यक्रम में शिरकत करने अलौली गए थे। वहां मंच से वे बाफोर्स पर बोलते हुए राजीव गांधी के स्विस बैंक के खाते का उल्लेख कर रहे थे। भाषण के दौरान ही उन्होंने धीरे से एक पर्ची पर लिखकर पूछा कि 'कमल' को अंग्रेजी में क्या कहते हैं। लोकदल के तत्कालीन जिला महासचिव हलधर प्रसाद ने उस स्लिप पर 'लोटस' लिखकर कर्पूरी जी की ओर बढ़ाया। इसके बाद उन्होंने कहा, 'राजीव माने कमल, और कमल को अंग्रेजी में लोटस बोलते हैं। इसी नाम से स्विस बैंक में खाता है राजीव गांधी का।'

कर्पूरी ठाकुर जब मुख्यमंत्री थे तो उनके प्रधान सचिव थे यशवंत सिन्हा। वे आगे जाकर वाजपेयी सरकार में वित्त और विदेश मंत्री बने। किस्सा है कि एक दिन दोनों अकेले में बैठे थे तो कर्पूरी ठाकुर ने यशवंत सिन्हा को कहा, 'आर्थिक दृष्टिकोण से आगे बढ़ जाना, सरकारी नौकरी मिल जाना, इससे क्या यशवंत बाबू आप समझते हैं कि समाज में सम्मान मिल जाता है? जो वंचित वर्ग के लोग हैं,

भारतीय दलित साहित्य अकादमी का अद्वितीय ग्रन्थ आज ही मंगायें

Book of Record–Who's Who International and National Awardees of Bharatiya Dalit Sahitya Akademi

300 पृष्ठों का यह अकादमी का ऐतिहासिक, अद्वितीय, अनूठा ग्रन्थ है जिसमें अकादमी के गत 36 सालों में अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय नेशनल अवार्डियों का वर्षवार विवरण दिया गया है। इस ग्रन्थ का कान्टेंट (सन्दर्भ) भी A to Z–क्रमानुसार दिया गया है जहां कोई भी नेशनल या इन्टरनेशनल अवार्डी अपना नाम देखकर तुरन्त क्रमवार जान सकता है कि उसे सम्मेलन में किस वर्ष में कब, किस अवार्ड से सम्मानित किया गया था। अकादमी का वह सम्मेलन कब, कहां आयोजित हुआ और उस सम्मेलन में किस मुख्य अतिथि द्वारा उसे 'अवार्ड' देकर सम्मानित किया गया।

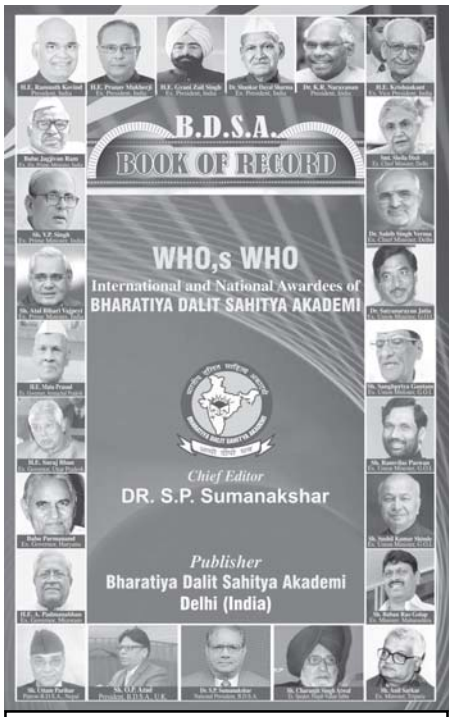

- **Total References of Personalities- about 2500**
- **Page : 300**
- **Price : Rs. 500/- Send by M.O./D.D.**

इस ग्रन्थ में प्रत्येक अवार्डी का उसे अलग–अलग अवार्डों से सम्मानित होने का भी वर्षवार विवरण है साथ ही उन्हें एक, दो, तीन, चार 'स्टार' प्रदान कर उनके सामाजिक, साहित्यिक व सांस्कृतिक कार्यों के योगदान को दर्शाया गया है।

इस ऐतिहासिक, अद्वितीय, अनोखे ग्रन्थ के मुख पृष्ठ पर उन सभी राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, उपप्रधानमंत्री, राज्यपाल, मुख्यमंत्री, मंत्री व समाजसेवियों के चित्र दिये गये हैं जिन्होंने गत 36 वर्षों में मुख्य अतिथि के रूप में सम्मेलन की शोभा बढ़ाने के साथ–साथ सम्मेलन में प्रतिभागी प्रतिनिधियों को अपने उद्बोधन से राष्ट्र सेवा में अग्रसर रहने के लिए प्रेरित किया और उन्हें 'अवार्ड' से सम्मानित कर उनके रचनात्मक कार्यों व योगदान की सराहना की।

अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित इस अद्वितीय ग्रन्थ में ढाई हजार के लगभग महानुभावों का विवरण दर्ज है जिनमें अवार्डियों के अलावा सम्मेलन के मुख्य अतिथि और अकादमी के संरक्षक, मार्गदर्शक और सहयोगी शामिल हैं।

दलित साहित्य पर शोधकर्त्ताओं, साहित्यकारों, समाजसेवियों के लिए यह ग्रन्थ अमूल्य है, पठनीय है और सन्दर्भ ग्रन्थ के रूप में संग्रहणीय है। बाबा साहब डा. अम्बेडकर को समर्पित इस अनमोल ग्रन्थ का मूल्य 500 रुपये है जिसे आर्डर देकर अकादमी कार्यालय से मंगाया जा सकता है।

इस ग्रन्थ के सम्पादक, संरक्षक, प्रकाशक अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सोहनपाल सुमनाक्षर हैं जिनके कई वर्षों के परिश्रम के बाद इस ग्रन्थ का प्रकाशन हो सका। ग्रन्थ मंगाने के लिए सम्पर्क करें–

भारतीय दलित साहित्य अकादमी
बी–3/9, दूसरी मंजिल,
माडल टाउन–I, दिल्ली-110009
मोबाइल :
9891989175, 9810278936

उसको इसी से सम्मान प्राप्त हो जाता है क्या?'

आगे उन्होंने अपना उदाहरण दिया। वे मैट्रिक में फर्स्ट डिविजन में पास हुए थे। नाई का काम कर रहे उनके बाबूजी उन्हें गांव के समृद्ध वर्ग के एक व्यक्ति के पास लेकर गए और कहा, 'सरकार, ये मेरा बेटा है, फर्स्ट डिविजन से पास किया है।' उस आदमी ने अपनी टांगें टेबल के ऊपर रखते हुए कहा, 'अच्छा, फर्स्ट डिविजन से पास किया है।' उस आदमी ने अपनी टांगें टेबल के ऊपर रखते हुए कहा, 'अच्छा, फर्स्ट डिविजन से पास किए हो? मेरा पैर दबाओ।'

इस तरह की तमाम चुनौतियों से पार पाते हुए कर्पूरी ठाकुर आगे बढ़े। 1967 में जब पहली बार नौ राज्यों में गैर कांग्रेसी सरकारों का गठन हुआ तो महामाया प्रसाद के मंत्रिमंडल में वे शिक्षा मंत्री और उपमुख्यमंत्री बने। उन्होंने मैट्रिक में अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त कर दी और यह बाधा दूर होते ही कस्बाई–देहाती लड़के भी उच्च शिक्षा की ओर अग्रसर हुए, नहीं तो पहले वे मैट्रिक में ही अटक जाते थे।

1970 में 163 दिनों के कार्यकाल वाली कर्पूरी ठाकुर की पहली सरकार ने कई ऐतिहासिक फैसले लिए। आठवीं तक की शिक्षा मुफ्त कर दी गई। उर्दू को दूसरी राजकीय भाषा का दर्जा दिया गया सरकार ने पांच एकड़ तक की जमीन पर मालगुजारी खत्म कर दी। जब 1977 में वे दोबारा मुख्यमंत्री बने तो एस–एसटी के अलपवा ओबीसी के लिए आरक्षण लागू करने वाला बिहार देश का पहला सूबा बना। 11 नवंबर 1978 को उन्होंने महिलाओं के लिए तीन (इसमें सभी जातियों की महिलाएं शामिल थीं), गरीब सवर्णों के लिए तीन और पिछड़ों के लिए 20 फीसदी यानी कुल 26 फीसदी आरक्षण की घोषणा की। इसके लिए ऊंचे तबकों ने एक बड़े वर्ग ने भले ही कर्पूरी ठाकुर को कोसा हो, लेकिन वंचितों ने उन्हें सिर माथे बिठाया। इस हद तक कि 1984 के एक अपवाद को छोड़ दें तो वे कभी चुनाव नहीं हारे।

सादगी के पर्याय कर्पूरी ठाकुर लोकराज की स्थापना के हिमायती थे। उन्होंने अपना सारा जीवन इसमें लगा दिया। 17 फरवरी, 1988 को अचानक तबीयत बिगड़ने से उनका देहांत हो गया। भारत सरकार ने महामना कर्पूरी ठाकुर की आजीवन की गई सेवाओं के लिए उनकी 100वीं जयंती पर 26 जनवरी, 2024 को भारतरत्न से विभूषित करके महान कार्य किया है।

स्वामी, सम्पादक/ प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर द्वारा वन्दना आफसेट प्रिन्टर्स, A-9 सराय पीपलथला एक्सटेंशन, दिल्ली-33 में मुद्रित तथा रजि. कार्यालय : 233 टैगोर पार्क, माडल टाउन, दिल्ली-9 से प्रकाशित। ❑ सह सम्पादक - जय सुमनाक्षर, फोन : 27421449, मो. 9810278936 **Email-sumanakshar@ymail.com**

नोट : हिमायती में प्रकाशित रचनाओं के लिए सम्पादक की सहमति जरूरी नहीं। हिमायती से सम्बन्धित किसी भी कानूनी कार्रवाई का क्षेत्र दिल्ली न्यायालय तक ही सीमित है।

सम्पादकीय कार्यालय : बी 3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन-1, दिल्ली-110009